International Journal of Research in Economics and Social Sciences (IJRESS)
Available online at http://euroasiapub.org/journals.php
Vol. 6 Issue 7, July 2016,
ISSN(O): 2249-7382, | Impact Factor: 6.225 | Thomson Reuters ID: L-5236-2015

नेपाल में प्राथमिक शिक्षा का उद्भव एवं विकास

डॉ पूनम लता मिड्ढा, सहायक व्यख्याता (शिक्षा), श्री विनायक महाविधालय, श्री विजयनगर (राजस्थान)

भूमिका शिक्षा मानवीय संवेदना का वह पक्ष है जिससे उसके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास होता है। शिक्षा मानव के विचारों एवं व्यवहारों का सृजनात्मक पक्ष है। यदि किसी देश के विकास, उन्नति या संस्कृति का आकलन करना है तो सबसे पहले वहां की शैक्षिक प्रगति को देखना पड़ेगा क्योंकि शिक्षा ही वह सीढ़ी है जो राष्ट्र को प्रत्येक क्षेत्र में विकास की चरम सीमा तक पहुँचा सकती हैं। ऐसे में शिक्षा के सम्पूर्ण विकास के लिए वहां व्याप्त समस्याओं का समाधान करके ही उसकी उच्चतम उपलब्धि तक पहुंचा जा सकता है।

1. प्रस्तावना

आज समाज में नैतिक मूल्यों का निरन्तर द्रूत गति से होता हुआ हास सभी के गम्भीर चिन्ता का विषय है। सभी क्षेत्रों में कर्तव्य भावना का अभाव, स्वार्थ भाव की प्रबलता एवं व्यवहार में उच्च श्रृंखलता दृष्टिगोचर हो रही है। विद्यार्थियों में अनुशासनहीनता एवं असंयमित व्यवहार निरन्तर बढ़ता चला जा रहा है, परिणामतः सर्वत्र अशान्त वातावरण दिखाई देता है। संस्कार सतत चलने वाली प्रक्रिया है जिसका विस्तार बीज से वट की ओर होता है। इस दृष्टि से प्राथमिक विद्यालयों का सर्वाधिक महत्व है। यहीं से उत्तम संस्कार बालक में समाहित होकर उसके भावी जीवन का निर्माण करते है। यदि हमारे छात्रों को . अपनी महानता, उज्जवल संस्कृति, गौरवपूर्ण इतिहास, महापुरूषों का ज्ञान कराया जाय तथा प्राथमिक विद्यालयों का वातावरण संस्कारक्षम शिक्षा हो तो आज की नैराश्यपूर्ण स्थिति को निश्चित बदला जा सकता है।

किसी समाज या राष्ट्र का विकास या उसकी महत्ता पूर्णतया उस राष्ट्र या समाज के मानव के विकास पर निर्भर करती है। जिस राष्ट्र या समाज का मानव जितना विकसित होगा, वह राष्ट्र या समाज उतना ही उन्नत होगा क्योंकि राष्ट्र या समाज का महत्वपूर्ण अंग या संसाधन मानव है। शिक्षा द्वारा ही व्यक्ति के व्यवहार को परिमार्जित एवं परिवर्तित करके उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं सुयोग्य बनाकर समाज व राष्ट्र का एक उपयोगी नागरिक बनाया जाता है। शिक्षा का जन्म मानव के साथ ही हुआ है और शिक्षा ग्रहण करने

का कार्य बालक के जन्म . से ही आरम्भ हो जाता है शिक्षा की प्रथम पाठशाला परिवार एवं प्रथम शिक्षिका माता को कहा गया है। तत्पश्चात औपचारिक शिक्षा का प्रारम्भ प्राथमिक शिक्षा के द्वारा होती है जिसके लिए बालक को विद्यालय जाने की आवश्यकता पड़ती है।

प्राथमिक शिक्षा का अभिप्राय प्रारम्भ की शिक्षा काल के 5–7 वर्षों से है। विश्व के विभिन्न देशों में आवश्यकता और सुविधा के अनुसार इसकी अवधि अलग–अलग है। भारतवर्ष में इस शिक्षा के अन्तर्गत 6–14 वर्ष के बच्चे आते है। प्राथमिक को ही प्राइमरी, बेसिक या निम्न प्राथमिक ओर उच्च प्राथमिक को जूनियर हाईस्कूल या मिडील अथवा जूनियर विद्यालय कहते है। समेकित रूप में इसे प्रारम्भिक शिक्षा या प्राथमिक शिक्षा कहना ही अधिक उपयुक्त है।

2. नेपाल में प्राथमिक शिक्षा का विकास

भारत के उत्तर में हिमालय की गोद में बसा नेपाल राष्ट्र स्थित है। नेपाल की भौगोलिक स्थिति इसके वैशिश्य का पहिचान सम्पूर्ण विश्व को कराती है। काठमाण्डौ स्थित भगवान पशुपतिनाथ का मन्दिर यहां के आराध्य है वही अहिंसा का उपदेश देने वाले भगवान गौतम बुद्ध की जन्मस्थली लुम्बिनी यहीं है।

भगवान राम की जीवन संगिनी माता जानकी का मायका जनकपुर धाम यहीं है। मुक्तिनाथ पहाड़ों की गोद में बसा दुर्लभ शिव मंदिर है तो विश्व की सबसे ऊँची चोटी सगरमाथा (माउण्ट एवरेस्ट) भी इसी देश की भौगोलिक सीमा में आता है।

नेपाल में अधिकाधिक समय तक राजतंत्र (राजतंत्रात्मक शासन) रहने के कारण शिक्षा का विकास ठीक ढंग से नहीं हो सका। सन् 1950 में नेपाल में प्रजातंत्र आने के बाद मेची से महाकाली (पूरब से पश्चिम) तक हिमाल से तराई (उत्तर से दक्षिण तक) तक शिक्षा के विस्तार की आवश्यकता महसूस की गई।

विद्यालय तीव्र गति से खोले गये। इस प्रकार समय–समय पर शिक्षा बोर्डो का गठन हुआ, आयोग बनाये गये, सुझाव मांगे गये, उन्हें क्रियान्वित किया गया जिसमें प्राथमिक शिक्षा की अनिवार्यता पर बल दिया गया।

''शिक्षा से बढ़कर मौलिक वस्तु पृथ्वी पर और कुछ भी नहीं है।'' मानव के उद्‌भव एवं विकास के साथ–साथ शिक्षा का भी विकास हुआ। इसी प्रकार विश्व सभ्यता के विकास क्रम के साथ प्रत्येक देश व राष्ट्र के विकास को हम अध्ययन की दृष्टि से प्राचीन काल, मध्य काल तथा आधुनिक काल में बांटकर अध्ययन को सरल व सुगम बनाते है।

नेपाल में प्राचीन काल की शिक्षा घर परिवार के बाद गुरूकुल में सम्पन्न होती थी। इसके पश्चात संस्कृत शिक्षा एवं बौद्ध शिक्षा प्रचलन में आई। इसी क्रम में लिच्छवि कालीन शिक्षा तथा मल्लकालीन शिक्षा का प्रसार हुआ। इसी प्रकार नेपाल में शिक्षा का प्रसार होता गया। नेपाल में शिक्षा का विकास बहुत व्यापक या पुराना नहीं है फिर भी इसे निम्नलिखित क्रम में रखकर देखा जा सकता है।

प्राचीन काल की शिक्षा

- आदि कालीन शिक्षा
- संस्कृत शिक्षा या वैदिक कालीन शिक्षा काल
- बौद्ध शिक्षा काल

मध्यकालीन शिक्षा

- लिच्छवि कालीन शिक्षा
- मल्लकालीन शिक्षा

आधुनिक शिक्षा काल या औपचारिक शिक्षा काल तथा राजाकालीन शिक्षा।

स्वदेशी शिक्षा काल :

आदिकालीन शिक्षा नेपाल में शिक्षा का इतिहास प्राचीन समय से शुरू होता है। इस समय शिक्षा का आधार घर या परिवार था। उस समय माता पुत्री व पुत्र को सामाजिक रीजि रिवाज की शिक्षा देती थी। मनुष्य के 100 वर्ष की अवस्था को चार भागों में विभाजित किया था। जोकि 25 वर्ष ब्रम्हचर्य अगले 25 वर्ष गृहस्थ आश्रम इसके बाद 25 वर्ष वानप्रस्थ आश्रम फिर अन्तिम 25 वर्ष सन्यास आश्रम के लिए था। इसी क्रम में ब्राम्हण, गुरू, पुरोहित आदि समाज में शिक्षा देने व पथ प्रदर्शन का कार्य करते थे।

संस्कृत शिक्षा या वैदिक शिक्षा : (जिम चमतपवक व िंदोतपज वत टमकपब म्कनबंजपवद) वर्णाश्रम के प्रादुर्भाव के पश्चात ब्राम्हण पुत्रों को वैदिक संहिता, वेदवेदांग, नीतिशास्त्र, ज्योतिष, आयुर्वेद, मीमांसा व्याकरण, न्याय, श्रुति स्मृति, कर्मकाण्ड आदि का अध्ययन कराया जाता था। उसी प्रकार क्षत्रिय पुत्रों को धनुर्वाण, राजनीति, अर्थशास्त्र, दण्डनीति, किला संरक्षण तथा अश्वारोहण की शिक्षा दी जाती थी। इसी प्रकार वैश्यों को कृषि, पशुपालन, व्यापार सम्बन्धी ज्ञान दिया जाता था। 25 वर्ष तक ब्रम्हचर्य आश्रम में ज्ञान प्राप्ति के पश्चात दीक्षा लेकर घर को वापस प्रस्थान करते थे।

बौद्ध शिक्षा काल

आडम्बर एवं भेदभाव रहित सत्य व अहिंसा पर आधारित गौतम बुद्ध के दर्शन को बौद्ध शिक्षा कहते है। बौद्ध शिक्षा के केन्द्र बिहार गुम्बा तथा भिक्षुओं के संघ स्थल थे। बौद्ध शिक्षा में किसी वर्ण या लिंग का भेद नहीं था। महिला या पुरूष कोई भी भिक्षु बनकर शिक्षा लेने योग्य हो सकते थे।

प्राकृत तथा पाली भाषा, बौद्ध दर्शन तथा साहित्य त्रिपिटक, जातक आदि पढ़ाई के विषय थे। भिक्षुओं में बौद्ध दर्शन के ज्ञाता को बिहार, मठ, बहालों में शिक्षा देने का दायित्व था। शिक्षण विधि, प्रवचन, प्रश्नोत्तर तथा वाद–विवाद में सीमित था।

लिच्छविकालीन शिक्षा

लिच्छवि काल में नेपाल की शिक्षा संस्कृति तथा कला के तरफ उन्मुख थी। मानदेव, अंशु वर्मा जैसा प्रख्यात राजाओं के समय भी शिक्षा में सन्तोषजनक प्रगति हुई। इस समय शिक्षा में वेद, व्याकरण, न्याय, ज्योतिष, साहित्य, दर्शन, कला तथा दर्शन में विशेष जोर दिया गया।

मल्ल कालीन शिक्षा

नेपाल के इतिहास में मल्लकालीन राजाओं को विद्वान तथा शिक्षा प्रेमी मानते है। इस काल में बौद्ध तथा हिन्दू दोनो धर्मो की प्रधानता थी। मठ मन्दिर के माध्यम से कलात्मक शिक्षा का विकास मानते है। मल्ल राजाओं में प्रमुख सुधारक राजा सिद्धि नरसिंह मल्ल को प्रमुख मानते हैं। राजकीय प्रयास में काम करने

वाले गुभाजू, प्रधान, मास्के भण्डारी, आचार्य आदि का योगदान था। चौथी शताब्दी में राजा जय स्थिति मल्ल ने प्रजा में विभिन्न जाति में विभाजित करके कार्य विभाजन किया। इसी प्रकार प्रताप मल्ल का संस्कृति में सुधार भी विशेष उल्लेखनीय है।

शैक्षिक उपेक्षा का काल

बाइसे चौबीसे राज्य में पृथ्वीनारायण शाह ने वि० सं0 1825 (ई01768) में नेपाल का एकीकरण करने के पश्चात भी विद्रोह की प्रबल सम्भावना थी। उस समय राजा ने सुरक्षा पर सारा ध्यान केन्द्रित किया। सैनिकों का प्रशिक्षण व छात्रवृत्ति की व्यवस्था की गई। पृथ्वी नारायण शाह ने डोटी, जुम्ला पाल्पा तथा कास्की जिले में संस्कृत शिक्षा की व्यवस्था की। रण बहादुर शाह ने वि0सं0 1862 में गुठी का हरण कर शिक्षा व्यवस्था पर आघात किया। राज परिवार के अन्तर्गत आन्तरिक कलह के कारण वि०सं0 1903 में असोज 3 गते कोत पर्व घटना घटी जो दरबार में नरसंहार के रूप में थी। इसके पश्चात श्री 5 राज गद्दी पर तथा श्री 3 (राणा वंशज) देश की शासन व्यवस्था संभालेगें यह तय हुआ। इसके पश्चात वि०सं01906 में श्री 3 जंगबहादुर राणा ब्रिटेन गये तथा वहां की अंग्रेजी शिक्षा से प्रभावित हुए इसके फलस्वरूप वि० सं0 1910 में थापाथली दरबार में अंग्रेजी प्राथमिक शिक्षा का प्रारम्भ किये।

शिक्षा का विरोध काल

श्री 3 के वंशज राजाओं का चिंतन शिक्षा के प्रति बदल गया उनकी सोच थी कि केवल अपने परिवार को शिक्षा दिया जाय, नेपाली जनता शिक्षित होगी तो हमारे शासन पर खतरा हो सकता है, इसलिए राजधानी से बाहर शिक्षा का प्रसार न हो। इस सिद्धान्त से प्रेरित होकर राजाओं का शासन आम जनता की शिक्षा का विरोधी था। परन्तु धीरे–धीरे वि० सं० 1955 के पश्चात जनता के भाव भंगिमा को देखते हुए पूरे देश में खासकर भारत से जुड़े तराई हिस्से में स्कूल खुलने शुरू हुए। इसी क्रम में पोखरा, मटिहानी, वीरगंज, सिरहा, तौलिहवा, जनकपुर आदि स्थानों पर विद्यालय खुल गये। वि0सं01990 में एस0एल0सी0 परीक्षा बोर्ड की स्थापना हुई। इस प्रकार वि० सं0 2007 तक 104 वर्ष के राजा शासन काल में अन्त तक शिक्षा व्यवस्था की स्थिति निम्न प्रकार थी।

संदर्भ

- ए बी नेपाल में शिक्षा । नेपालः प्रकाशन ब्यूरो, शिक्षा कॉलेज। 1956.
- 'नेपाल में शिक्षा प्रणाली'' ।
- 'सीआईए वर्ल्ड फैक्ट बुक'' । द वर्ल्ड फैक्टबुक । सीआईए। 2015.
- राष्ट्रीय शैक्षिक विकास केंद्र'' ।
- ए बी ''वर्ल्ड टीवीईटी डेटाबेस नेपाल – नेपाल में व्यावसायिक शिक्षा'' (पीडीएफ) । यूनेस्को–यूएनईवीओसी ६ तकनीकी शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण परिषद नेपाल। जनवरी 2014 । 18 मार्च, 2018 को लिया गया ।
- ए बी ''काठमांडू पोस्ट– चितवन में बच्चे प्राथमिक स्तर पर शिक्षा से वंचित'' ।
- बेइन, कॉघली और श्रेष्ठ। 2012. चेपांग तब और अबः नेपाल के चेपांग के बीच जीवन और परिवर्तन । ब्लर्ब बुक्स ।
- 'नेपाल में शिक्षा की क्या समस्याएं हैं? द्य साक्षी शिक्षा द्य शिक्षा विभाग नेपाल'' 2021–03–11 को लिया गया ।
- मारू, डंकन (2 अगस्त, 2017)। ''नेपाल में अमेरिकी दूतावास के अनादर की संस्कृति'' । हफपोस्ट । 18 मार्च, 2018 को लिया गया ।
- शिक्षा मंत्रालय, नेपाल
- शिक्षा पर विश्व डेटाः नेपाल, यूनेस्को–आईबीई (२०१०–२०११) – नेपाली शिक्षा प्रणाली का अवलोकन
- नेपाल में व्यावसायिक शिक्षा, यूनेस्को–यूएनईवीओसी – नेपाली व्यावसायिक शिक्षा प्रणाली का अवलोकन
- 'स्कूलों में सबसे गरीब लाना'', विश्व बैंक (2009)
- नेपाल में उच्च शिक्षा और टीवीईटी पर रिपोर्ट, एशियाई विकास बैंक (2016)